महात्मा गाँधी के आर्थिक विचारधाराओं का भारतीय राष्ट्रवाद पर प्रभाव

केशव कुमार बर्नवाल*

महात्मा गाँधी के आर्थिक विचारधाराओं का भारतीय राष्ट्रवाद पर अत्यंत सकारात्मक प्रभाव पड़ा। गाँधी जी का राष्ट्रीय जीवन में आगमन ऐसे समय में हुआ जब देश में ब्रिटेन के आर्थिक नीतियों के प्रति व्यापक असंतोष था। दक्षिण अफ्रिका से लौटने के बाद गाँधी जी ने भारत के नवोदित राष्ट्रवाद का प्रथम सफल प्रयोग चम्पारण सत्याग्रह में ही किया था।[1] चम्पारण में गाँधी जी के नेतृत्व वाला यह आन्दोलन वस्तुतः गाँधी जी के आर्थिक विचारधाराओं के अनुकूल था। गाँधी जी के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रवाद का यह पहला प्रयोग अहिंसा, सत्य एवं शोषित दलित जनसमूह के जागरण तथा उन्मुक्ति पर बल देने के कारण सर्वथा अद्वितीय था।[2] इस आन्दोलन में गाँधी जी ने आर्थिक विषमताओं को दूर करने पर बल दिया।

समाज की आर्थिक एवं सामाजिक विषमताएँ मानव समाज में असंतुलन पैदा करती हैं। फलतः भारत के राष्ट्रपिता ने सर्वप्रथम आर्थिक विषमताओं को दूर करने तथा समाज के शुद्धिकरण पर बल दिए। डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद ने इस संदर्भ में 1949 ई0 में कहा था–''चम्पारण में जो कुछ हुआ मेरे आशा के अनुरूप सारे देश में विराट पैमाने पर उसकी पुनरावृत्ति की गई। चम्पारण नीलहे साहबों (गोरे भूपतियों) के अत्याचार से मुक्त हुआ।[3] चम्पारण में महात्मा गाँधी के आगमन ने इस क्षेत्र के लोगों में उनके आन्दोलन को सही होने की चेतना तथा आस्था भर दी जो किसी भी आन्दोलन के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है। चम्पारण के तीन कठिया–व्यवस्था के अन्तर्गत रैयत को जमींदार की फसल के लिए अपनी सबसे अच्छी जमीन संरक्षित करने को बाध्य किया जाता था। रैयतों को झुकाने के लिए प्लांटरों ने जो अन्य तरीके इस्तेमाल किए गए उनमें उनका मवेशी जब्त करना, उनके घरों पर प्यादा बैठाना, किसानों को दिवानी या फौजदारी मुकदमों में घसीटना तथा उनपर अनेक अत्याचार करना।[4] महात्मा गाँधी ने चम्पारण सत्याग्रह में ऐसे समस्त विकृतियों पर जमकर प्रहार किए, जिससे न केवल कृषक एवं श्रमिकों के दीन–हीन दशा में परिवर्तन हुआ बल्कि भारतीय समाज के लोगों में नवोदित राष्ट्रवाद को भी गति प्राप्त हुई।

शोधार्थी, इतिहास विभाग जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा

कांग्रेस के सितम्बर 1920 ई0 के अधिवेशन में युगान्तकारी महत्वपूर्ण प्रस्ताव 'असहयोग आन्दोलन' को प्रस्तुत किया गया। असहयोग आन्दोलन गाँधी जी के महान आर्थिक बुद्धिमती की परिचायक है जिसके कार्यक्रमानुसार सरकारी लेवी, दरबार एवं अन्य सरकारी अधिकारियों या उनके सम्मान में किए जानेवाले सरकारी या अर्द्धसरकारी आयोजनों में भाग नहीं लेना था। सरकार द्वारा सहायता प्राप्त नियंत्रित अथवा सरकारी स्कूल एवं कॉलेज से भारतीय बच्चों को धीरे–धीरे हटाना। ऐसे स्कूल एवं कॉलेजों के स्थान पर प्रान्तीय स्कूल एवं कॉलेज खोलना। सरकारी मुकदमों, न्यायालयों का बहिष्कार करना तथा सबसे बड़ा कार्यक्रम यह था–'सरकारी वस्तुओं का बहिष्कार करना।''[5] महात्मा गाँधी द्वारा आन्दोलन के कार्यक्रम के इस प्रकार के रूपरेखा को तैयार करने के पीछे मुख्य उद्देश्य जहां एक ओर भारतीय राष्ट्रवाद को गतिशीलता प्रदान करना था वहीं दूसरी ओर ब्रिटीश सरकार के कठोर आर्थिक नीतियों को धाराशायी करना था।[6] साम्राज्य चाहे कितना भी मजबूत क्यों न हो आर्थिक विपन्नता की स्थिति में सुदृढ़ नहीं रह पाता है। महात्मा गाँधी ने अपने महान राजनैतिक बुद्धिमता का परिचय देते हुए ब्रिटीश सरकार को औपनिवेशिक शोषणकारी नीतियों पर कुठाराघात असहयोग आन्दोलन के रूप में किया जिसका आर्थिक प्रभाव ब्रिटीश सरकार पर प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से पड़े।

अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की 31 मार्च एवं 01 अप्रैल 1921 को मद्रास प्रान्त के बेजवाड़ा नामक स्थान में बैठक हुई। इसमें सरकार की आर्थिक दमनकारी नीति भारतवर्ष के लिए अत्यन्त ही अनुपयुक्त घोषित किया गया।[7] विशुद्ध रचनात्मक कार्य के संबंध में उसमें एक प्रस्ताव पारित करके लोगों को तीन बातों पर ध्यान केन्द्रित करने को कहा–क–अखिल भारतीय तिलक स्वराज अधिकोष में एक करोड़ की धनराशि जमा करना, ख–कांग्रेस का एक करोड़ सदस्य बनाना और ग–ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में 20 लाख चरखा चलवाना।[8] महात्मा गाँधी के ऐसे प्रयासों से स्वदेशी तथा चर्खा आन्दोलन पर व्यापक प्रभाव पड़ा। गाँधी जी के द्वारा चलाया जानेवाला स्वदेशी आन्दोलन ने शीघ्र ही अपने पाँव सम्पूर्ण भारतवर्ष में जमा लिया। स्वदेशी आन्दोलन ने ब्रिटीश हुकूमत के आर्थिक पहलूओं पर कुठाराघात किया। विदेशी वस्तुओं की माँग कम हो जाने से ब्रिटीश–विपणन भी दुष्प्रभावित हुआ। चर्खा आन्दोलन ने तो अपना ऐसा स्वरूप अख्तियार किया कि ब्रिटीश हुकूमत के सुती वस्त्र व्यवसाय कमजोर होने लगे। दूसरी ओर भारतीय आर्थिक रूप से सशक्त होने लगे।[9]

कलकत्ता में 03 जनवरी 1929 ई0 को वर्किंग कमिटी की बैठक हुई। उसके एक प्रस्ताव के अनुसार गाँधी जी ने खादी के माध्यम से विदेशी वस्त्र

बहिष्कार की एक योजना तैयार की जो 17 फरवरी तथा 19 फरवरी के वर्किंग कमिटी में स्वीकृत किया गया जिसके आलोक में विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार करने का निर्णय लिया गया, विदेशी वस्त्रों की होलिका जलाने के साथ–साथ विदेशी वस्त्रों को बेचनेवाले दुकानों पर धरना देने का प्रस्ताव पास हुआ। गाँधी जी ने कलकत्ता में 04मार्च 1929 ई0 को विदेशी वस्त्रों की होली तथा प्रदर्शन की व्यवस्था की जिसके लिए उन्हें ब्रिटीश हुकूमत को एक रूपये का जुर्माना चुकाना पड़ा।[10] ऐसे तमाम प्रयासों के पीछे महात्मा गाँधी का एकमात्र लक्ष्य आर्थिक राष्ट्रवाद के नवोदित रूपरेखा को समृद्ध बनाकर स्वतंत्रता संग्राम को अधिकाधिक गतिशीलता प्रदान करना था।

पंडित जवाहरलाल नेहरू के अध्यक्षता वाले 1929 ई0 का लाहौर अधिवेश 29–31 दिसम्बर 1929 ई0 को सम्पन्न हुआ। कांग्रेस के इस अधिवेशन में 'पूर्ण स्वाधीनता' प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। अधिवेशन में स्पष्ट कहा गया कि कांग्रेस संविधान की धारा–1 में स्वराज का अर्थपूर्ण स्वाधीनता होगा। पूर्ण स्वाधीनता का तात्पर्य आर्थिक स्वतंत्रता एवं राजनैतिक स्वतंत्रता दोनों के समाहित रूप को प्राप्त करना था।[11] महात्मा गाँधी ने इस पूर्ण स्वराज पर बल देते हुए इसके प्राप्ति हेतु नमक सत्याग्रह का नया मार्ग प्रशस्त किया। महात्मा गाँधी द्वारा नमक जैसे वस्तु का चयन राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने के लिए किया गया जो अत्यंत ही तार्किक था। नमक एक ऐसी वस्तु है जो अमीर एवं गरीब सबके घरों में सामान्य रूप से पाया जाता है तथा इसकी उपयोगिता सबके लिए है। महात्मा गाँधी के नमक सत्याग्रह ने न केवल जनसाधारण को जोड़ने का काम किया बल्कि ब्रिटीश सरकार की शोषणकारी आर्थिक गतिविधियों पर भी लगाम लगाने का काम किया जिसके परिणामस्वरूप ब्रिटीश हुकूमत की औपनिवेशिक जड़ें खोखली होने लगी।[12]

अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी का रामगढ़ अधिवेशन मौलाना अबुल कलाम आजाद की अध्यक्षता में हुई। महात्मा गाँधी इस अवसर पर खादी और ग्रामोद्योग प्रदर्शनी का उद्घाटन किए। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि ''आप ग्रामीण जनता को यह दिखला सकते हैं कि उनके पास जो कला है उसपर हवाई बमबाजी भी बेअसर साबित होगा। अभी ग्रामवासी अपने वैसे निधियों से अनभिज्ञ हैं।''[13] महात्मा गाँधी ऐसे अनेक छोटे–छोटे आर्थिक पहलूओं पर जनसाधारण का ध्यान आकृष्ट कराते हुए उन्हें जागरूक बनाने के साथ–साथ भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन को प्रबलता प्रदान करने का कार्य आजीवन करते रहे।

वस्तुतः महात्मा गाँधी के आर्थिक विचारधाराओं का भारतीय स्वाधीनता संग्राम पर बहुत बड़े सकारात्मक प्रभाव पड़े। गाँधी जी के नेतृत्व वाला कोई भी आन्दोलन हो उसके बुनियाद में आर्थिक राष्ट्रवाद की पृष्ठभूमि अपने प्रबलतम रूप

में विराजमान था। पराधीन भारत के सामाजिक जागरूकता एवं आर्थिक गतिशीलता को प्राप्त करने का लक्ष्य गाँधी जी ने अपने विविध आन्दोलनों के साथ जोड़ा, जिससे समाज के पिछड़े, शोषित, कृषक एवं श्रमिक वर्ग को विकसित करने का मौका मिला तथा आन्दोलन का स्वरूप भी मजबुत हुआ।

संदर्भ संकेत –

1. के0 के0 दत्त : बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृ0 सं0 180
2. वही
3. डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद : सत्याग्रह इन चम्पारण–द्वितीय संस्करण, सितम्बर 1949 ई0 भूमि, पृ0 सं0 10
4. के0के0 दत्त : बिहार में स्वातंत्र्य आन्दोलन का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृ0 सं0 268
5. यंग इंडिया, 20 दिसम्बर 1920 ई0
6. पी0सी0 बैम्फोर्ड : हिस्ट्री ऑफ नन–कोऑपरेशन एण्ड खिलाफत मूवमेंट, 1925, पृ0 सं0 27
7. वही,
8. वही
9. तेन्दुलकर : महात्मा, खण्ड–2, पृ0 सं0 79
10. बिहार प्रांतीय कांग्रेस कमिटी की वार्षिक रिपोर्ट, 1928–29
11. के0के0 दत्त : बिहार में स्वांतत्र्य आन्दोलन का इतिहास, खण्ड–द्वितीय, पृ0 सं0 47
12. यंग इंडिया की साप्ताहिक रिपोर्ट, मई 1930 ई0
13. राजेन्द्र प्रसाद : आत्मकथा, पृ0 सं0 545

****